कहानी

पहचान

– केशव दुबे

विनायक जी टिकिट की लम्बी कतार में खड़े थे। भीड़ काफी थी और गर्मी तथा उमस के कारण सब बेचैन थे। तभी एक शोहदा-सा दिखनेवाला लड़का लम्बी लाइन की तरफ उपेक्षा से देखता आगे बढ़ा और सीधा बुकिंग विण्डो के पास चला गया। दूर, पान की दुकान पर खड़े एक ऊँचे पूरे अधेड़ से दिखनेवाले आदमी ने उसे आवाज दी, "क्यों रे ?"

लड़के ने चिल्लाकर कहा, "बस गुरु, अभी आया।" और अपना हाथ खिड़की के भीतर बढ़ा दिया। लाइन में खड़े लोगों ने पीछे मुड़कर देखा जरूर; मगर कोई कुछ नहीं बोला। विनायक जी से न रहा गया। वे गुस्से से चीख पड़े, "ऐ, तुम लाइन से आओ भाई, क्या मजाक है ? इतने लोग खड़े हैं कब से, पागल हैं सब ?" कुछ लोगों ने उन्हें पलटकर देखा; मगर कोई कुछ नहीं बोला। पान की दुकान पर खड़ा व्यक्ति उन्हें घूरता हुआ उनके पास आया और उनके कन्धे पर हाथ रखता बोला, "क्यों ? ज्यादा तकलीफ हो रही है ? देख नहीं सकता ? तो घर जा, काहे को खड़ा है ?"

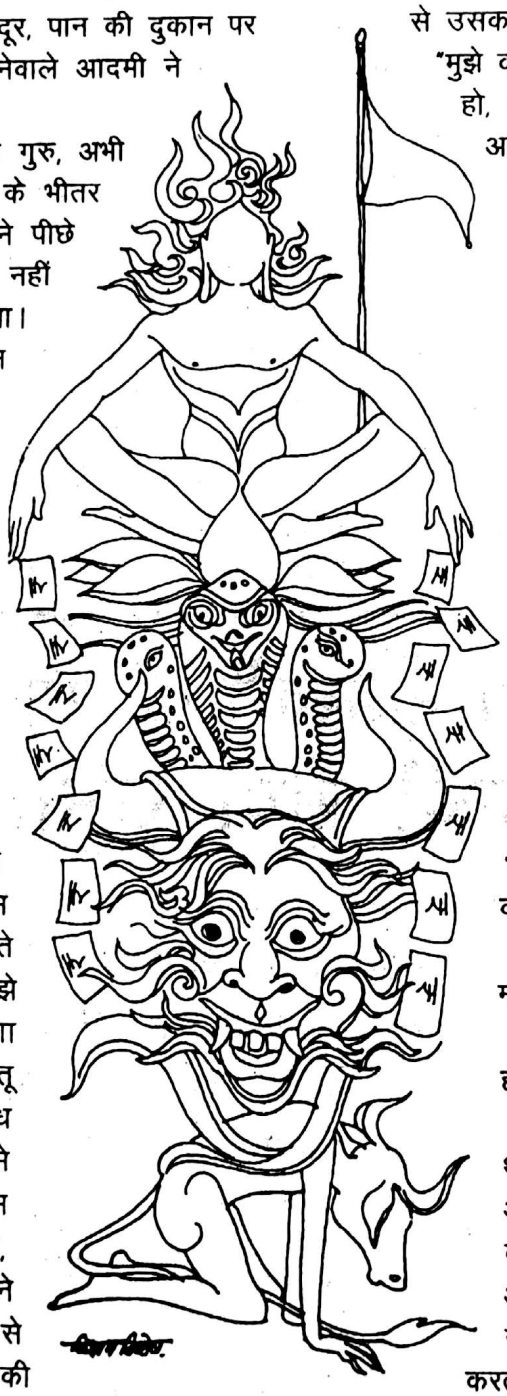

विनायक जी कानून और शराफत की दुहाई देते बड़बड़ाने लगे। उस आदमी ने उनके कन्धे पर दबाव बढ़ाते खुसफुसाते हुए स्वर में कहा, "तो तुझे नेतई करने का शौक है ? घुसा दूँगा धरती में यहीं का यहीं। अरे, तू पहचानता है हमें ?" सारी भीड़ स्तब्ध खड़ी थी। विनायक जी असहाय से चारों तरफ देखने लगे। पास ही घूम रहे एक सिपाही को देखकर बोले, "देखिये मुंशी जी, ये..." सिपाही ने उनकी बात काटकर उस आदमी से कहा, "पा-लागै महाराज !" और भीड़ की तरफ डण्डा हिलाने लगा, "चलो चलो... अपने काम में लगो। मजमा करोगे, तो धर लिये जाओगे।" इस लम्बे-चौड़े खूँखार से दिखनेवाले आदमी ने विनायक जी का कन्धा हिलाते हुए कहा, "तू पहचानता है, किससे बात कर रहा है? तू पहचानता है हमें ?"

उसके साथ खड़े दो आदमी आगे बढ़े, तो उसने रोक दिया, "नहीं, ये खुद पहचानेगा हमें। सारा शहर जानता है, पूरी बस्ती को मालूम हे– बिन्दा महाराज क्या है... ये भी जान जायेगा अपने आप।" विनायक जी धीरे से अपने कन्धे से उसका हाथ हटाकर बड़बड़ाते हुए चल दिये, "मुझे क्या जरूरत पहचानने की। होगे तुम जो हो, सो। मुझे क्या ?" ठहाके के साथ एक आवाज उन्हें सुनायी दी, "जान जायेगा, जल्दी क्या है ?"

उन्हें तबादले के बाद इस शहर में आये ज्यादा अरसा नहीं हुआ था। वे इस घटना को भूल ही चुके थे, तभी वह शख्स फिर मिला। वे बाजार से लौट रहे थे, हाथ में सब्जी का एक थैला था। वह एक भारी-भरकम मोटर साइकिल पर पैर टिकाये बैठा था, चौरस्ते के मोड़ पर उसके पास ही टिकट खिड़की वाला, वह शोहदा-सा छोकरा खड़ा था, जो उन्हें देखकर बोला, "गुरुऽऽ ये वोई है बस-स्टैण्ड वाला, जो कानून छाँट रहा था उस दिन। आपको पहचानता भी नहीं।" वह पान थूककर हँसता हुआ बोला, "वाह ! तो तुम्हीं हो वह तुर्रम खाँ, हमें पहचानते भी नहीं ! नये आये हो शहर में, क्या करते हो ?"

विनायक जी झुँझलाकर बोले, "आपसे मतलब ? आप अपना काम कीजिये।"

वह हँसा, "वही कर रहे हैं। पहचाना हमें ?"

वे उसके मुँह नहीं लगना चाहते थे। धीरे से बोले, "तो आप ही बता दो आप हैं कौन ?" वह तीखी अवाज में बोला "बिन्दा महाराज बतलाते नहीं, अपने आप जानना पड़ता है। बिना जाने-बूझे हमसे बहस कर रहे थे ? क्या करते हो ?"

विनायक जी को गुस्सा तो आ रहा था; मगर कुछ सहम भी गये थे। धीरे से बोले, "टीचर हूँ मिडिल स्कूल में, यहाँ नया आया हूँ।"

उसने ठहाका लगाया, "तभी तो ! मास्टर और नीम चढ़ा। खूब कानून छाँट रहा था, हमें जानता नहीं।"

Scanned by CamScanner

विनायक जी गुस्से से बोले, "जरूरी है क्या ?"

वह बोला, "हाँ ! है। तू जैसा उस दिन उलझ रहा था और जैसा आज बोल रहा है, तो सुन, जरूरी है। जल्दी नहीं है, जान जायेगा हमें।" उसने मोटर साइकिल स्टार्ट की और चल दिया। विनायक जी ने देखा, दुकान वाले, कुछ गुमटी और ठेले वाले तथा पैदल चलते लोग उन्हें लगातार देखे जा रहे थे।

इसके बाद तो उसने मजाक जैसा बना लिया। बाजार, बस स्टैण्ड, स्टेशन, चौराहे, सब तो जैसे उसके अड्डे थे। कहीं न कहीं वह विनायक जी से टकरा ही जाता। वे लाख कोशिश करते कि बचकर निकल जायें; मगर वह रास्ता रोक लेता। फिर शुरू हो जाता, "क्यों, पहचाना हमें ?" एक बार उन्हें रोककर वह बोला, "क्यों कहाँ तक पहुँचे ?" उसके एक शागिर्द ने विनायक जी की पीठ के पीछे से कहा, "गुरु, आज बता दूँ इस अकड़-फूँ को ?"

वह ठहाका मारकर हँस दिया, "रहने दो... रहने दो। यह खुद जान जायेगा, तब आपै पा-लागे करते घूमेगा।"

विनायक जी परेशान रहने लगे थे। आखिर ये है कौन ? क्यों पीछे पड़ा है ? वे एक शरीफ आदमी, बाल बच्चों वाले, नौकरी-पेशा, इस शहर में नये.... कहाँ के कहाँ उलझ पड़े, उस दिन... और उलझे क्या, बस चार बातें ही तो सुना दी थीं सही-सही... मगर वहीं तो जञ्जाल बन गया। उन्होंने अपने मन को समझाया... है कोई बिन्दा महाराज, तो रहा आये ! अब जरूरी है क्या, कोई अपना नाम सुना दे, तो तुम थर-थर काँपने लगो, गिड़गिड़ाने लगो, पसर जाओ ? गुण्डे, बदमाश कहाँ नहीं होते ? मगर इससे क्या ? मतलब ही क्या ? वह अपने रस्ते, शरीफ अपने रस्ते ?.... मगर हर रास्ता कहीं न कहीं तो जाकर मिलता ही है...।

इसी उधेड़बुन में एक दिन परेशान से उन्होंने अपने पड़ोसी रामप्रसाद से पूछ लिया, "भाई, ये बिन्दा महाराज कौन है ?" पड़ोसी अखबार पढ़ रहा था। उनकी बात सुनकर ऐसे उछल पड़ा, जैसे साँप देख लिया हो। फिर उनको गौर से देखकर, हाथ पकड़ तखत पर बिठाते हुए पूछा, "क्या हो गया मास्साब ? ये नाम कहाँ से सुना ?"

वे अकबका कर बोले, "हो क्या गया ? मैंने नाम ही तो बताया है। आखिर तुम तो शहर के रहनेवाले हो ! जानते होगे, इस बिन्दा को !"

पड़ोसी ने बात काटते हुए कहा, "महाराज कहो... बिन्दा महाराज। क्या हो गया ? वारदात क्या हुई ? जरूरत क्या पड़ी ? क्यों पूछ रहे हो ?"

विनायक जी खीज पड़े, "अरे, नाम ही तो पूछा है, कौन से लाल जड़े हैं इस नाम में ?"

रामप्रसाद गम्भीर स्वर में बोला, "तुम बाहरी आदमी, सीधे-सच्चे... किसी फेर में तो नहीं पड़ गये ? ये इस इलाके का सबसे खतरनाक आदमी है। किसी जमाने का सबसे बड़ा गुण्डा, बदमाश, जल्लाद आदमी। क्या नहीं किया इसने ?

श्री श्रीकृष्णदास माहेश्वरी की स्मृति में स्थापित
'राष्ट्रधर्म हिन्दी सेवा सम्मान– २०१३'

हिन्दीतर प्रदेशों के ऐसे दो हिन्दीसेवियों को प्रतिवर्ष रु. २१,०००/= (रु. इक्कीस हजार) का यह सम्मान प्रदान किया जाता है, जिनकी मातृभाषा हिन्दी न हो। वर्ष २०१३ के लिए कर्नाटक तथा केरल का चयन किया गया है, जिसमें कन्नड़ तथा मलयालम मूल के एक–एक लेखक को उसकी समग्र हिन्दी सेवा के लिए लखनऊ में एक भव्य समारोह में सम्मानित किया जायेगा। कर्नाटक एवं केरल के मूल निवासी लेखक अपना पूर्ण परिचय सम्बन्धित साहित्य के साथ भेज सकते हैं।

राष्ट्रधर्म में प्रविष्टियाँ प्राप्त होने की अन्तिम तिथि ३१ मई, २०१३ है।

–: आयोजक :–

'राष्ट्रधर्म हिन्दी सेवा सम्मान'

संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ– २२६००४ (उ.प्र.)

विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क करें– ०५२२-४०४१४६४ (११ से ५ बजे तक अवकाश छोड़कर)

Scanned by CamScanner